॥ अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत ॥

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव.

-: नाट्यशास्त्र :-

नवीन अभ्यासक्रम

अभ्यासक्रम संरचना -

सैध्दांतिक भाग	-	८० मार्क
प्रात्यक्षिक भाग	-	२० मार्क
		१०० मार्क

वार्षिक परीक्षा	-	८० गुण	-	८०
प्रात्यक्षिक	-	६० गुण	-	२०
		गुण		१०० गुण

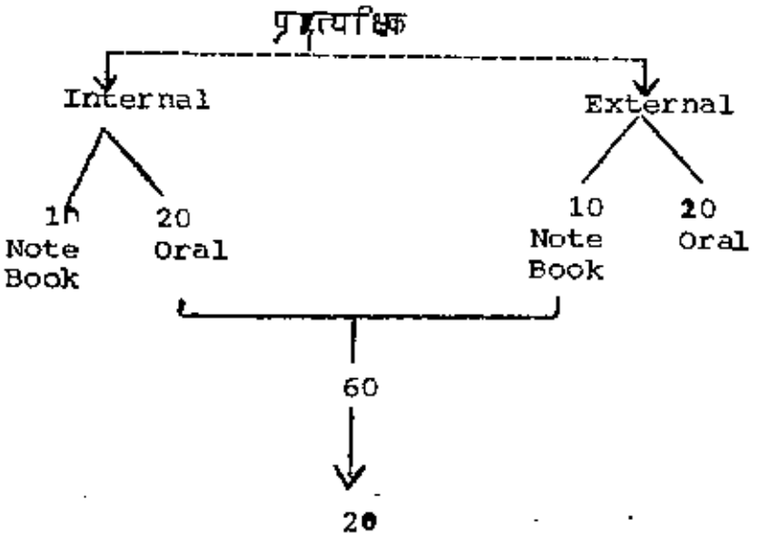

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

प्रत माहितीसाठी :-

मा. उपकुलसचिव, परीक्षा विभाग, उमवि, जळगांव.

।। अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत ।।

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव.

नृत्यकला प्रथम वर्ष कला अभ्यासक्रम (जून, १९९३ पासून)

स्पेशन कोर्स

थेअरी :-

१. परिभाषा – सलामी, आमद, तत्कार, हस्तक, ताल, लय, मात्रा, आवृत्ति, ताली, खाली, सम, ठेका, गत इ.
२. पाठ्यक्रम में निर्धारित ताल समुहों के ठेके एकगुन, दुगुन लय मे लिखने का अभ्यास ।
३. तत्कार एकगुन, द्विगुण और चौगुन मे लिखने का अभ्यास ।
४. संगीत की परिभाषा और उसमे नृत्य का स्थान तथा नृत्यकला सीखने से लाभ ।
५. संगीत तथा भारत की दो मुख्य संगीत पध्दतियों की विस्तृत जानकारी ।
६. कथक नृत्य का संक्षिप्त इतिहास ।
७. निम्नलिखित तालों को भातखंडे पध्दति के अनुसार ताल लिपिबध्द करना । त्रिताल, दादरा, कहरवा, ठाह, दुगुन मे लिखने का अभ्यास ।
८. एकताल एवं झमताल का पूर्ण परिचय ।
९. महाराज बिन्दादीन तथा कालिका प्रसाद का संक्षिप्त जीवन परिचय ।

प्रॅक्टीकल :-

१. तत्कार तथा तोंडों को हाथ से ताली देकर ठाह, दून और चौगुन मे बोलना ।
२. शरीर और कन्धे के शारीरिक व्यायाम का अभ्यास ।
३. लय और छन्द मे चलने का अभ्यास ।
४. लय और ताल के माध्यम से सिर, कमर इ. का संचालन ।
५. तीनताल की मात्रा, ताल, विभाग, जाति, खाली और लय इ. की जानकारी और पठन्त ।
६. ताल दादरा और कहरवा की मात्रा, विभाग, ताली, खाली सहित जानकारी दे ।
७. ताल तीनताल मे छः साधारण तोडे, ४ तत्कार, सलामी, तथा २ तिहाईयाँ
८. भुमि प्रणाम एवं गुरु प्रणाम ।
९. गत निकास का अभ्यास [पल्ये और चाल के साथ]
१०. दादरा तथा कहरवा तालों में लोक नृत्य ।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

द्वितीय वर्ष कला

नृत्यकला अभ्यासक्रम [जून १९९४ पासून]

थेअरी :-

१. परिभाषा – परन, चक्करदार परन, मुद्रा, करण, अंगहार, उपांग, पल्य, कवित्त, कसक, मसक, कटाक्ष, प्रभलु, ठाह, लघु, गुरु इ.
२. चार प्रकार के ग्रीवा भेद का ज्ञान।
३. कथक नृत्य की उत्पत्ति एवं विकास।
४. कथक नृत्य के घरानों की जानकारी।
५. अभिनय का विस्तृत अध्ययन।
६. नृत्य मे अभिनय का स्थान एवं उनके विभिन्न प्रकारों के विषय में विस्तृत ज्ञान ।
७. कथक नृत्य मे रंगभूषा और वेशभूषा का ज्ञान।
८. वर्तमान समय के किन्ही दो प्रसिध्द कथक नृत्यकारों का जीवन परिचय तथा उनकी नृत्यशैलीयो का तुलनात्मक अध्ययन।
९. नऊ प्रकार के शिरोभेद की अभिनय दर्पण के अनुसार परिभाषा सहित जानकारी।
१०. यमन, बिलावल, तथा भैरवी रागों का पूर्ण परिचय और इनमे सरल गीत गाने की क्षमता।
११. निबन्ध – १] नृत्य एवं ललीत कलाऐं।
            २] कथक तथा भरत नाट्यम् की तुलना।

प्रॅक्टीकल :-

१. तीनताल तथा झपताल मे कम से कम २० मिनट तक नृत्य प्रदर्शन करने की क्षमता।
२. तेवरा, चारताल, सुलताल मे २–२ ततकार तथा कुछ तिहाईयाँ।
३. अंग प्रत्यंग का संचालन तथा कंधो का संचालन ताल के माध्यम से करने की क्षमता।
४. आमद का अभ्यास।
५. कलाई, ग्रीवा संचालन के साथ अभ्यास व गुरु वंदना का अभिनय।
६. शास्त्र में सीखे २० असंयुक्त हस्त तथा १० संयुक्त हस्तों का प्रायोगिक प्रदर्शन।
७. त्रिताल झपताल और एकताल के लहरे हारमोनियम पर बजाने का अभ्यास ।
८. तबला वादन का प्रारंभिक अभ्यास।
९. निम्नलिखित कथाओं पर नृत्य का अभ्यास
   १. माखन चोरी.
   २. कालीया दमन.
   ३. चीर हरण.
   ४. गोवर्धन धारण.

१०] तिनताल तथा झपताल के तत्कारों को एकगुन, दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा डेढ़गुन में प्रदर्शित करने की क्षमता ।

११] तीनताल में – ३ थाट, २ आमद, १ सलामी, ८ कठीन तोडे, ३ परन, तथा ३ चक्रदार परन, ४ कवित्त, १ तिरन जाती तोडा, प्रीमलु तोडा आदि का प्रदर्शन ।

१२] लय बाँट तथा अन्य लयकारियों का तत्कार में अभ्यास ।

१३] कोई २ लोकनृत्य ।

१४] किसी भी ठुमरी या भजन पर भाव अभिनय ।

–x–x–x–x–x –x–x–x–x–x

दुधाला./–

नृत्यकला तृतीय वर्ष कला अभ्यासक्रम [जून १९९५ पासून]

थैअरी :-

* धार्मिक कथाओं के अनुसार भारतीय नृत्य कलाओं की उत्पत्ति।
* ठुमरी गायकी की विशेषताएँ और कथक नृत्य में उनका भाव प्रयोग।
* द्रुत, अध्द्रुत व अणु, अणुद्रुत की जानकारी।
* वर्तमान समय के किन्ही दो प्रसिध्द कथक नृत्यकारों का पूर्ण परिचय तथा उनकी नृत्य शैलीयों का तुलनात्मक अध्ययन।
* परिभाषा - उरप पुरप, तिरप, उरमई, कुरमई, लाँगडाट, जाति परन, पक्षी परन, बोल परन, गत निकास, ग्रीवा-भेद, दृष्टि-भेद तथा गति भेद।
* भारत की अल्प ज्ञात शास्त्रीय नृत्य शैलीयाँ जैसे ओडीसी, कुचीपुडी इ. का परिचयात्मक ज्ञान।
* निबंध - १] भारतीय वृन्द वादन।
  २] भारतीय नृत्य के आदर्श।
  ३] भारतीय नृत्य में वृन्द वादन का स्थान।
  ४] नृत्य में घुंघरू का महत्त्व।

प्रॅक्टीकल :-

* निम्नलिखित तालों का ज्ञान।

  मत्त, [१८ मात्रा], बड़ी सवारी [१६ मात्रा]
  अष्टमंगल [११ मात्रा], शिखर [१७ मात्रा], लक्ष्मी [१८ मात्रा]
* हाव भाव की जानकारी, नृत्य में उनका प्रयोग
* कथक नृत्य मे मंगलाचरण, गुरुवंदना, भूमिवंदना के महत्त्व में विस्तृत जानकारी।
* ताल तिताल मे - दो तिस्त्र जाति की आमद, २ मिश्र जाति परन, १ प्रमलु परन तथा २ कवीत्य लिपिबध्द करने का अभ्यास।
* सवारी, रुपक में - १ आमद, २ तोडे, २ चक्रदार परन, २ कवित्य लिपिबध्द करना।
* जीवन परिचय. -

  १] अच्छन महाराज
  २] जयलाल महाराज.
  ३] चक्रधर सिंह जुदेव
  ४] स्वामी हरिदास जी वृन्दावन।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

।। अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत ।।

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव.

नृत्यकला प्रथम वर्ष कला अभ्यासक्रम. [जून १९९३ पासून]

जनरल कोर्स

थेअरी :-

१. परिभाषा – लय, ताल, खाली, आवर्तन विभाग, तत्कार, आमद, नृत्य, नाट्य, सलामी, नृत्य, सम, ताली, माला, हस्तक, कवित्त, परण, गत, तांडव, लास्य, मुद्रा, पठन्त इ.
२. संगीत तथा भारत की दो मुख्य संगीत पध्दतियों की व्याख्या तथा जानकारी।
३. भातखंडे तथा विष्णु पलुस्कर ताल पध्दतियों का ज्ञान तथा ततकार एवं पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों को इन्ही दो ताल पध्दतियों में लिखने का अभ्यास।
४. कथक नृत्य का संक्षिप्त परिचय।
५. तीनताल, झमताल, दादरा एवं कहखा तालों का पूर्ण परिचय।
६. पाठ्यक्रम में निर्धारित तोंडो को ताल लिपीबध्द करने का अभ्यास।

प्रॅक्टीकल :-

१. शरीर और कन्धे के शारिरीक व्यायाम का अभ्यास।
२. दादरा तथा कहखा तालों में दो छोटे नृत्य।
३. तीनताल की मात्रा, ताल, विभाग, खात्री और लय इ. की जानकारी एवं पठन्त।
४. त्रिताल मे छोटे छोटे छ : तोडे, एक सलामी तथा २ तिहाइयाँ।
५. पाठ्यक्रम मे निर्धारित सब टुकडे और तत्कार हाथ पर ताली खाली देकर बोलने का अभ्यास।
६. ताल दादरा और कहखा की मात्रा, विभाग, ताली, खाली सहित जानकारी दे।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

नृत्यकला द्वितीय वर्ष कला अभ्यासक्रम [जून १९९४ पासून]

थेअरी :-

१. परिभाषा – चक्रदार परण, चक्रदार तोडा, थाट, लय के प्रकार [विलम्बित, मध्य तथा द्रुत], ठाह, दुगन, तिगुन तथा चौगुन, खटक, मटक, कटाक्ष और प्रिमलु, मुखडा एवं, चाल इ.
२. अभिनय की परिभाषा व उसके चार प्रकारों का संक्षिप्त ज्ञान।
३. ध्वनि तथा नाद के विषय में साधारण ज्ञान।
४. एकताल तथा झुलताल का पूर्ण परिचय।

...२

प्रॅक्टीकल :-

१. त्रिताल मे [ठाह] एक गुण, दुगुण और तीगुण लय में तत्कार करने का अभ्यास।
२. ताल त्रिताल में आठ साधारण तोंडे व टुकडे।
३. ताल त्रिताल में दो साधारण गत।
४. तत्कार के कुछ प्रकारों का अभ्यास।
५. कहरवा व दादरा तालों में लय का अभ्यास।

—x—x—x—x—x—x—x—x—

तृतीय वर्ष कला

नृत्यकला अभ्यासक्रम [जून १९९५ पासून]

थेअरी :-

१. परिभाषा – मुद्रा, पताका, पल्प, तथा पूर्ववर्ती वर्षो मे निर्धारित सारे पारिभाषिक शब्दों का पूर्ण अध्ययन।
२. भारतीय नृत्य का संक्षिप्त इतिहास।
३. भातखंडे तथा विष्णू दिगम्बर ताल लिपि पध्दतियों का पूर्ण ज्ञान तथा दोनो की तुलना।
४. नाट्य, नृत्त व नृत्य का प्रारंभिक ज्ञान।
५. झमताल के ठेके को ताल लिपि मे लिखना।
६. रस व भावो का प्रारंभिक ज्ञान।
७. ताल की उत्पत्ति एवं नृत्य में उनकी उपयोगिता।
८. शम्भु महाराज, नारायण प्रसाद, स्व.श्री.जयलालजी, आदि का जीवन परिचय।

प्रॅक्टीकल :-

१. ठाट, कसक, मसक का अभ्यास।
२. पूर्व वर्ष के पाठ्यक्रम के तोंडो का विलम्बित लय में प्रदर्शन का अभ्यास।
३. एक हाथ की मुद्रा का क्रियात्मक ज्ञान।
४. दोन विशेष लोकनृत्य।
५. सूल ताल मे २ तत्कार तथा २ तोडे।
६. एकताल मे सलामी, ४ तोडे तथा २ तिहाईयाँ।
७. ताल त्रिताल के तत्कार को ठाह दुगुन, तिगुन एवं चौगुन में प्रदर्शन का अभ्यास।

—x—x—x—x—x—x—x—x—x—x—x—

।। अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत ।।

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव.

नृत्यकला प्रथमवर्ष कला अभ्यासक्रम [जून १९९३ पासून]

थेअरी कोर्स

थेअरी –

१. परिभाषा – लय, ताल, मात्रा, सम, ताली, खाली, आवर्तन, विभाग, तत्कार, गत, पल्टा, आमद, परन, नृत्य, नाट्य लास्य, ताण्डव, सलामी, नृत्य, हस्तक, ठेका, बोल, ठाह, दुगुन ।

२. संगीत तथा भारत की दो मुख्य संगीत पध्दतियोंकी व्याख्या ।

३. अंग, उपांग, प्रत्यांग की व्याख्या तथा छः अंग, छः प्रत्यंग अर्थात उनके उपांग, आठ नयन भाव, ४ ग्रीवा संचालन, छः भृकुटी संचालन ।

* जीवन परिचय – नारायण प्रसाद एवं बिन्दादिन महाराज, कालका प्रसाद ।
* संगीत की परिभाषा और उसमे नृत्य का स्थान तथा नृत्यकला सीखने से लाभ ।
* भूमि वंदना, गुरु वंदना के महत्त्व पर प्रकाश डालीए ।
* अभिनय की परिभाषा तथा उसके चार प्रकारों का संक्षिप्त ज्ञान ।

प्रॅक्टीकल :-

* तीनताल, दादरा, कहरवा, झपताल के ठेके एकगुण, द्विगुण तथा चौगुन लय में लिखने का अभ्यास ।
* तीनताल तथा झपताल के तत्कार एकगुण, दुगुन और चौगुन में लिखने का अभ्यास ।
* भातखण्डे तथा विष्णु पलुस्कर ताल पध्दति में फरक, उनके चिन्हो साहित्य दिखाए ।
* पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों में टुकडा, परण इ. ताल लिपी में लिखने का अभ्यास
* तत्कार के कुछ प्रकारों को ताल लिपी बध्द करने का अभ्यास ।
* चार प्रकार के ग्रीवा भेद तथा आठ प्रकार के दृष्टिभेद के प्रयोग के बारे में जानकारी ।

–x–x–x–x–x–x–x–x–x–

...२

द्वितीय वर्ष कला
नृत्यकला अभ्यासक्रम [जून १९९४ पासून]

* ध्वनि तथा नाद के विषय में विस्तृत ज्ञान।
* परिभाषा – पठन्त, मुद्रा चक्रदार तोडा, अंग, प्रत्यंग, उपांग, गतभाव, चक्रदार परन, मुष्टि, पताका, त्रिपताका, करण, रेचक, अंगहार, कसक, मलक, कटाक्ष और प्रिमलु इ.।
* नृत्य मे घुंघरू का प्रयोजन और महत्व के सम्बन्ध में ज्ञान तथा नृत्य के घुंघरू किस प्रकार होने चाहिए।
* कथक नृत्य का विस्तृत इतिहास।
* धार्मिक कथाओंके अनुसार भारतीय नृत्य/कलाओं की उत्पत्ती।
* उत्तर भारत के लोक नृत्य का अध्ययन एवं उनका भविष्य।
* निबंध – १] योगी और नर्तक के बीच भेद।
  २] विदेश में भारतीय नृत्य की जनप्रियता।
  ३] नृत्य के विकास में विभिन्न घरानों का योगदान।
  ४] लोक नृत्य और शास्त्रीय नृत्य।

प्रॅक्टीकल :-

* आठ नायिकाओ व ४ प्रकार के नायकों का प्रारंभिक ज्ञान।
* विभिन्न तालों मे टुकडा, परण, तोडा, चक्रदार परण इ. विविध लयकारी में लिपिबध्द करने का अभ्यास।
* भारतीय नृत्यकी समस्त हस्त मुद्राओं का अध्ययन।
* नृत्य प्रदर्शन को सुंदर बनानेवाले निम्नलिखित विषयों का सामान्य ज्ञान।
  १] वेशभुषा और रूपसज्जा २] रंगमंच व्यवस्था व सज्जा।
  ३] प्रकाश व्यवस्था ४] वृन्द वादन।
* धमार, रूपक, आडा चारताल, दिपचन्दी, धुमाली तथा पंचम सवारीका पूर्ण परिचय तथा विभिन्न लयकरियो का ज्ञान।
* निम्नलिखित मुद्राओं के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान – जाति [Cast मनुष्य की], दशावतार, देवी एवं देवता।

  उपर्युक्त विषयों ने हिंन्दु संस्कृति में किस प्रभाव का विस्तार किया उनके सम्बन्ध में ज्ञान।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

।। अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत ।।

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव.

तृतीयवर्ष कला

नृत्यकला अभ्यासक्रम [जून १९९८ पासून]

थेअरी :-

१. परिभाषा – निकास, भ्रमरिया, रस, भाव, चलनचारी, एक पाद भ्रमरी, त्रिपल्ली, चारी मण्डल, घुंघट, जाति-परन, ग्रीवा-भेद, गत तोडा, गत भाव इ.

२. भारत के शास्त्रीय नृत्य, कथक, कथाकली, मणिपुरी, भरतनाटयम् का परिचयात्मक अध्ययन तथा इनकी तुलना।

३. व्याख्या – वर्ण, आरोह, अवरोह, अलंकार, थाट, राग, तुरावर्त, लयकारी, लय तथा लयकारी का भेद।

४. नृत्य में रस की उपयोगिता तथा हाव, भाव की जानकारी और उसका नृत्य में प्रयोग।

५. ताल की उत्पत्ति एवं नृत्य में उनकी उपयोगिता तथा ताल के दस प्राणों का ज्ञान।

६. निबंध – १] लोक नृत्य और शास्त्रीय नृत्य।
२] भारतीय वृन्द वादन।
३] नृत्य में आध्यात्मिकता का स्थान।
४] संगीत तथा साहित्य के विशेषताएँ और महत्त्व।

७. नृत्य नाटिका प्रस्तुत करने के नियम.

८. अ] कथक नृत्य में कवित्त और ठुमरी का स्थान।
ब] ठुमरी में कवित्त, रस तथा भाव का स्थान।

९. भारतीय नृत्य की, समस्त संयुक्त तथा असंयुक्त के सम्बन्ध में अध्ययन।

१०. विभिन्न तालों में टुकडा, परन चक्रदार इ.

११. खमाज, काफी, तिलंग तथा बिहाग रागों का पूर्ण परिचय।

१२. महाराज ठाकुर प्रसाद, महाराज ईश्वरी प्रसाद, रूक्मिणि अरुन्डेल, उदय शंकर तथा सितारा देवी का जीवन परिचय तथा नृत्य में इनका योगदान।

प्रॅक्टीकल :-

१. ताल त्रिताल मे घुंघट के प्रकार तथा बंसी और पनघट के गतभाव।

२. विभिन्न लयकारियों का ज्ञान। तीनताल में ततकार द्वारा डेढ्गुन तथा तिन्गुन को दिखाना।

३. सूलताल, रूपक, सवारी ताल मे ततकार।

४. संयुक्त हस्तों का प्रयोगिक प्रदर्शन।

५. गुरु वंदना, भूमि वंदना, श्लोक के साथ अभिनय तथा थाट का प्रदर्शन।

६. किसी भी तालों मे ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा आठगुन में तत्कार करते हुए तिहाई की क्षमता।

७. निम्नलिखित तालों में – । आमद । चक्रदार । कवित्य । परन । टुकडा तिस्त्र जाती में तथा मिश्र जाती में ।. सवारी, रूपक, झपताल.

८. ताल त्रिताल में – । राधा लास्य । कृष्ण लास्य, गंगावतरण, २ तिस्त्र जाती आमद, २ मिश्र जाति की परन, गत निकास होली, तीरकमान, घुंघट, मुरली की गत, ३ नये थाट, ४ चक्रदार परन, ५ कठिन तोडे इ.

९. शिखर ताल [१७ मात्रा], अष्टमंगल ताल [२२ मात्रा] में थाट, २ आमद, २ परन, ३ तोडे, २ चक्रदार, तथा कवित्य प्रस्तुत करने की क्षमता ।

१०. तत्कार में कायदा तथा पैर, २ पैर, ३ पैर से चक्कर लेने का अभ्यास ।

११. गतभाव और गत निकास विभिन्न चालों के साथ प्रदर्शन करने की क्षमता अहिल्या उध्दार, भस्मासुर मोहिनी, कालीया दमन ।

१२. कोई भी प्रादेशिक लोक नृत्य जैसे गरबा, रास, कोली, छपेली, लावणी भांगडा इ. का प्रदर्शन करने की क्षमता ।

१३. लक्ष्मीताल, ब्रम्हताल, जत, ध्रुपदा, झुमरा, रूपक, गजझम्पा, गणेश, तिलवाडा तालों को हाथ से ताली देकर ठाह दुगुन, तिगुन, चौगुन में बोलना तथा पैर से निकालना ।

१४. थाट के साथ कसक मसक का अभ्यास ।

—x—x—x—x—x—x—x—x—x—x—x—

।। अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत ।।

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव.

नाट्यशास्त्र प्रथम वर्ष कला अभ्यासक्रम [१९९३ पासून]

प्रात्यक्षिक प्रकरण.

१. नाटक म्हणजे काय ? नाटक आणि नाटकांचे उपप्रकार
कविता, नाटक, कथा आणि कादंबरीतील फरक, ललीतकला व प्रयोगजीवीकला - स्वरूप, साम्य व भेद, नाटकाची आवश्यकता व महत्व. भारतीय समाजाच्या दृष्टीने इतर कला प्रकारापेक्षा नाटक आधिक महत्वाचे का ?

२. अभिनय - शास्त्र की कला.

अभिनय कला - तात्त्वीक मिमांसा [भारतमूनी, अभिनय गुप्त, स्तानीस्लावस्थी, ब्रेहत, गौरौस्की, पिटर ब्रुक.
अभिनय - विविध शैली.

अभिनय शैलीवर प्रभाव पाडणारे घटक.
अभिनय - शारिरीक बौध्दीक आणि मानसिक तयारी अनुषंगिक प्रश्न -
परकाया प्रवेश, बहुरूपी, एकपात्री प्रयोग.

३. योगासनांचे अभिनयातील महत्व, योगासनांचे प्रकार.
Voice and Speech - Breathing, Jone, Jempo,
Pitch, Volume.

४. मराठी रंगभूमिचा इतिहास -

तंजावर रंगभूमी विष्णूदास भावे कालीन रंगभूमी,
संगीत रंगभूमी, आधूनिक मराठी रंगभूमीवरील प्रयोग, महाराष्ट्रातील लोककला- ललीत, ओव्या, भारूड, गोंधळ, तमाशा.

५. सामाजिक व राजकीय परिवर्तनाच्या दृष्टीकोनातून महात्मा फुले यांचे "तृतीय रत्न" नाटकाचा अभ्यास

६. नाट्य संगीत -

ताल - सूरांची ओळख संगीताचा परिणाम;
जागा कश्या ओळखाव्यात, नाट्य संगीतासाठी वापरली जाणारी वाद्ये,
संगीत संयोजनाची साधने.

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

...२

द्वितीय वर्ष कला

नाट्यशास्त्र अभ्यासक्रम [जून १९९४ पासून]

प्रात्यक्षिक प्रकरणे.

१. नाटकांचे प्रकार –

पौराणिक, ऐतिहासिक, कौटुंबिक, सामाजिक, प्रायोगिक, दलित इ.

Tragic, Commic, Melodramatic.

२. दिग्दर्शन – संकल्पना, स्वरूप, जबाबदारी–या व कार्य
Script reading, The poit of view of Play, The meaning of line, To consider Personalities of charracter, function, Principle and Design of BLOCKING, Composition, Picturaization, Movement and Rhytham

3. What is mime ? Importance of mime,
Use of body and face in mime,
What is improvisation ? Story development through improristion.

४. भारतीय रंगभूमी चा इतिहास

प्राचिन संस्कृत रंगभूमी आणि भरतमुनीचे नाट्यशास्त्र.
समांतर भारतीय रंगभूमी – बंगाली, कानडी, पारशी, हिंदी आणि गुजराथी यक्षगान या लोकपरंपरेचा अभ्यास.

५. सामाजिक व राजकिय परिवर्तनाच्या दृष्टीकोनातून नाटकाचा अभ्यास–

मृच्छकटीक या नाटकांच्या संदर्भात.

६. रंगभूषा – तत्वे आणि प्रकार –

रंगभूषेसाठी आवश्यक ती साधने
वेशभूषा – उद्दिष्टे.

नाटकासाठी वेशभूषेचा आलेख [Design]

–x–x–x–x–x–x–x–x–x–x–

तृतीय वर्ष कला

नाटयशास्त्र अभ्यासक्रम जून १९९५ पासून

प्रात्यक्षिक प्रकरणे.

१. नाटक आणि प्रेक्षक

नाट्य समिक्षा – संकल्पना आणि घटक.

२. जागतिक रंगभूमीचा इतिहास
ग्रिक, रोमन आणि ब्रिटीश रंगभूमी.

३. प्रकाश योजना – साधने, हाताळण्याचे प्रकार.
Use of colour and effects of colour.

नेपथ्य – इतिहास.
Elements of seenic Design, Line, Colour, Form, Shape, Texture, Types of set.
Introduction of stage property and its Clarrification.

४. सामाजिक परिवर्तनाच्या दृष्टीकोनातून The Dolls House ह्या नाटकांचा अभ्यास.

५. Writting Techaniques
Story, Story Development story and charactor, Charactor and problems, result, climax.

६. नाट्य व्यवस्थापन –

संघटनाप्रकार – हौशी, व्यावसायिक, संमिश्र.
Duties of producer
Who will became a manager.
नाट्यनिर्माता दिग्दर्शक आणि व्यवस्थापकांच्या कामाचे विभाजन
Management of Office, Finance and Marketing.

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

"अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत"
उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव.

प्रथम वर्ष कला अभ्यासक्रम [जून १९९३ पासून]

संगीत [गायन] - [ऐच्छीक विषय]

* क्रियात्मक *

* रागज्ञान :- खालील रागांचे छोटे ख्याल - आलाप, बोलतानां व तानांसहित सादर करणे.

१] भूपाली, २] दुर्गा, ३] वृंदावनी सारंग, ४] बागेश्री
५] खमाज, ६] देस, ७] काफी, ८] भिमपलासी.

* या रागांचे आरोह, अवरोह व पकड, तसेच स्वरसमुदाय वरून राग ओळखणे.

* स्वर अलंकार.

* स्वर लावणे - कोमल, तीव्र व शुध्द स्वर लावणे.

* ताल ज्ञान :- १] समक , २] दादरा ३] कीताल ४] केरवा
५] झपताल, ६] एकताल या सर्व तालांची हातावर दुप्पट करणे.

* समुहगीत/ भावगीत सादर करणे.

* शास्त्र * [लेखी परिक्षेकरीता]

१] पाठयक्रमातील रागांचे शास्त्रीय ज्ञान -

रागांचे मेल [थाट] स्वर, आरोह, अवरोह, पकड, मुख्य स्वरसमुदाय, जाती, वादी, संवादी, वर्ज्य स्वर इ.

२] पाठयक्रमातील तालांचे ठेके, मात्रा, खंड [विभाग], सम , टाळी, काल इ. सहित लिहीणे.

३] भारतीय संगीताचा इतिहास .

४] व्याख्या :- संगीत, ध्वनी, नाद, स्वर, शुध्दस्वर, विकृत स्वर [कोमल, तीव्र] सप्तकमेल, अलंकार, पलटा राग जाति [ओडव, षाडव, पूर्ण]वादी संवादी, पकड आलाप, तान, स्वरमालिका [सरगमगीत], ख्याल, भजन, ध्रुपद, स्थाई, अंतरा, लय [विलंबीत मध्य, द्रुत], मात्रा, ताल, विभाग, सम, खाली [काल] दुगुन ठेका, वर्जित स्वर, आवर्तन-इत्न.

५] गीतांची स्वरलीपी लिहण्याचा अभ्यास.

६] शिकलेल्या अलंकारांना निरनिराळ्या रागांमध्ये, रागांचे नियम लक्षात घेवून लिहणे.

---*---

" अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत "
उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव.

द्वितीय वर्ष कला अभ्यासक्रम [जून १९९४ पासून]

संगीत [गायन]

* क्रियात्मक *

* राग ज्ञान :- * बडेख्याल :- १] भूपाली, २] कल्याण [यमन], ३] बागेश्री, ४] बिहाग.

* छोटेख्याल :- १] अल्हैया बिलावल, २] कामोद, ३] भैरव, ४] बिहाग, ५] केदार , ६] तिलककामोद, ७] पिलू, ८] भैरवी.

* वरील पैकी कोणत्याही रागाचे धृपद, धमार [दुप्पट व चौपट करणे] व तराना म्हणणे.

* तालज्ञान – विलंबीत एकताल, झुमरा, तिलवाडा, धमार, चौताल,
– वरील तालांची हातावर दुप्पट करणे व चौपट करणे.

* उपशास्त्रीय संगीत – भक्तीगीत/अभंग किंवा नाट्यसंगीत.

* शास्त्र * [लेखी परिक्षेकरीता]

१] भारतीय संगीताच्या दोन पध्दतींची तुलना –

१. उत्तर भारतीय संगीत पध्दती २] दक्षिण भारतीय [कर्नाटक] संगीत पध्दती.

२] प्राचीन व अर्वाचीन मतानुसार २२ श्रुतींचे स्वरात विभाजन.

३] पं. भातखंडे प्रणीत १० थाटांची व्याख्या, संधीप्रकाश राग, स्वर संख्यांवर आधारित राग विभाजन [जाती]

४] पं. विष्णू नारायण भातखंडे व पं. विष्णू दिगंबर पलूस्कर यांच्या स्वरलिपी ओळखणे व त्यात गितांची स्वरलिपी लिहणे.

५] चरित्रे – पं. विष्णू दिगंबर पलूस्कर, पं. भातखंडे, स्वामी हरिदास, अमीर खुसरो.

६] गायकाचे गुण व दोष.

७] व्याख्या – अनुलोम, विलोम, मींड, गमक सूत, घसीट, जमजमा, मुर्की, छूट, वाद्यांचे प्रकार – तत् , वितत्, घन, सुषिर इ.

८] पाठ्यक्रमातील रागांचा तुलनात्मक अभ्यास.

९] कला रसग्रहण [संगीत] गायन, वादन कला संदर्भात.

------ * ------

बोरसे/*

" अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत "

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव.

तृतीय वर्ष कला अभ्यासक्रम [जून १९९५ पासून]

संगीत [गायन]

* क्रियात्मक *

* रागज्ञान – बडेख्याल – १] अल्हैया बिलावल, २] भैरव, ३] भिमपलासी, ४] सारंग ५] केदार.

बडेख्याल – ताल वि. एकताल, तिलवाडा व झुमरा या तालांमध्ये गाण्याची क्षमता.

छोटेख्याल – १] जौनपूरी, २] मालकौंस ३] हमीर ४] परदीप, ५] तिलंग ६] देसकार ६] शंकरा ८] जयजयवंती.

छोटेख्याल – १] त्रीताल, एकताल, झमताल इ. तालांमध्ये गाण्याची क्षमता.

* ध्रुपद व धमार – दुप्पट, तिप्पट व चौपट करणे.

* तराना, चतरंग, त्रीवट.

* उपशास्त्रीय संगीत – नाट्यसंगीत, ठुमरी किंवा दादरा सादर करणे.

* तालज्ञान – द्रिपचंदी, आडाचौताल, व मागील वर्षी झालेले सर्व तालांची, हातावर देवून दुप्पट, तिप्पट व चौपट करणे.

* शास्त्र * [लेखी परिक्षेकरीता]

१] निबंध – १] जीवनात संगीताचे स्थान, २] आपल्या प्रिय कलाकाराचे कलाप्रदर्शन, ३] संगीताद्वारे आनंद ४] संगीत व साधना, ५] जनरली आणि संगीत.

२] खालील विषयांचे ज्ञान असणे.

अ] निबद्ध गाण्याचे प्राचीन प्रकार, प्रबन्ध, वस्तु आदि [धातु], अनिबद्ध गाण्याचे प्राचिन प्रकार, रागालाप, रसकालाप इत्यादि.

ब] रागाचे विस्तृत, तुलनात्मक आणि सुक्ष्म वर्णन व त्यात स्वरचीत आलाप आणि ताना लिहून सप्त-प्राकृतिक रागांमधील समता आणि विभिन्नता दाखविणे.

क] विभिन्नरागांमध्ये अल्पत्व, बहुत्व, अविभवि-तिरोभाव तथा इतर रागांची छाया याचे वर्णन करुन आलाप लिहणे.

ड] लिहलेल्या कठीण स्वरसमुहावरुन राग ओळखणे.

इ] दिलेल्या रागात नवीन धुन बनविणे.

ई] तालाचे ठेके कठिण लयकारीत लिहणे.

३] वृन्दवादन [आर्केस्ट्रा] रचनेचे नियम आणि प्रचलित वाद्ये सिद्धविण्याच्या पध्दती.

४] तानपुऱ्यातून उत्पन्न होणारे सहाय्यक नादाचे वर्णन व श्रुती संबंधी ज्ञान.

५] राग – रागिणी पध्दती, थाट पध्दती एवं रागांग पध्दतीचा अभ्यास.

६] कला रसग्रहण [संगीत] गायन, वादनासंबंधी.

——— * ———.

बोरसे/*